बुधवार, 25 जून 1980

4 आषाढ़ 1902 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

तीसरा सत्र

[खंड 1 में अंक 1 से 11 तक हैं]

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

विषय

निधन संबंधी उल्लेख	पृष्ठ
(श्री वी. वी. गिरि, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति)	1-10
श्री कमलापति त्रिपाठी।	2
श्री चरण सिंह ।	3
श्री समर मुखर्जी ।	3
प्रो. मधु दंडवते ।	3–4
श्री सी. टी. दंडपाणि ।	4
श्री सतीश अग्रवाल ।	4–5
श्री इन्द्रजीत गुप्त ।	5–6
श्री यशवन्त राव चव्हाण ।	6
श्री हरिकेश बहादुर ।	6
श्री पीयूष तिरकी ।	7
श्री जयपाल सिंह कश्यप ।	7
श्री इब्राहीम सुलेमान सेट ।	7–8
श्री अमर राय प्रधान ।	8
श्री गुलाम रसूल कोचक ।	8–9
श्री एन. सुन्दरराजन ।	9
श्री ए. के. राय ।	10–9

लोक सभा

बुधवार, 25 जून, 1980/4 आषाढ़, 1902 (शक)

लोक सभा ग्यारह बजे समवेत हुई ।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

निधन संबंधी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय: मुझे सभा को भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि के कल मद्रास में हुए दु:खद निधन की सूचना देनी है। श्री गिरि एक महान स्वतन्त्रता सेनानी थे तथा पचास से अधिक वर्ष तक देश के राजनीतिक जीवन में उनका प्रमुख योगदान रहा । अपने लम्बे सार्वजनिक जीवन में उन्होंने कई महत्वपूर्ण तथा भारी उत्तरदायित्व वाले पदों पर सफलता-पूर्वक कार्य किया । वे मद्रास प्रान्त में मंत्री रहे तथा बाद में केन्द्र में मंत्री रहे । वह उत्तर प्रदेश, केरल तथा कर्नाटक के राज्यपाल भी रहे । देश के सर्वोच्च पद पर निर्वाचित होने से पहले वह भारत के उप-राष्ट्रपति के पद पर रहे । श्री गिरि को देश के प्रति उनकी सेवाओं के सम्मान में, भारत रतन की उच्चतम उपाधि से विभूषित किया गया ।

श्री गिरि ने श्रमिक आन्दोलन के प्रति योगदान दिया । और यह भली प्रकार विदित है कि वह पूरे जीवन उस कार्य को भावातिरेक पूर्वक करते रहे । वह आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के संस्थापकों में से थे तथा उसके वह दो बार अध्यक्ष रहे। आल इंडिया रेलवेमैन फेडरेशन से उनके सक्रिय संबंधों से सभी परिचित हैं जिसके कि वह सात वर्ष तक महा सचिव रहे तथा बाद में उतने ही वर्ष तक उसके प्रेसिडेंट रहे । उन्होंने 1927 में जनेवा में हुआ अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन में ए. आई. टी. यू. सी. का प्रतिनिधित्व किया । तथा 1931 में लन्दन में हुए गोलमेज सम्मेलन में श्रमिकों का प्रतिनिधित्व किया। भारत के ट्रेड यूनियन आन्दोलन के इतिहास में श्री गिरि का नाम सदा अमर रहेगा ।

श्री गिरि प्रमुख सांसद थे । वह पुरानी केन्द्रीय विधान सभा के तथा बाद में कई वर्षों तक मद्रास विधान सभा के सदस्य रहे । 1952 में वह लोक सभा के सदस्य चुने गये । बाद में राज्य सभा के सदस्य के रूप में प्रतिभा का परिचय दिया ।

श्री गिरि के मधुर अनौपचारिक स्वभाव के कारण तथा उत्साहपूर्ण रवैये के कारण उन्हें सबसे आत्मीयता एवं प्यार मिला तथा सबमें उनके प्रति मैत्री भाव जागृत हुआ । श्री गिरि के निधन से पुरानी पीढ़ी के बचे हुए स्वतंत्रता सेनानियों में से एक और सेनानी चल बसा है । हम इस क्षति पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं तथा मुझे विश्वास है कि सभा उनके शोकग्रस्त परिवार को संवेदना पहुंचाने में मेरा साथ देगी ।

रेल मंत्री (श्री कमलापति त्रिपाठी): अध्यक्ष महोदय, मैं भारी मन से श्री वी. वी. गिरि के बारे में आपको व्यक्त भावनाओं के साथ शरीक होता हूं । श्री गिरि का जन्म 1894 में गंजम, जोकि अब उड़ीसा में है, में हुआ । सेकेंडरी शिक्षा समाप्त करने के बाद वह आयरलैंड में किंग्स 'इन' में कानून का अध्ययन करने गये । तत्पश्चात् 1914 में उन्होंने डबलिन इंडियन सोसायटी की स्थापना की। श्री गिरि बचपन से ही राष्ट्रवादी थे और प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान गांधी जी के सम्पर्क में आये । आयरलैंड से वापस आने के बाद उन्होंने बरहामपुर में वकालत शुरू कर दी ।

1921 में उन्होंने गांधीजी द्वारा चलाये असहयोग आन्दोलन में भाग लिया । तथा उन्हें तीन महीने का कारावास का दंड मिला । जेल से छूटने के बाद उन्होंने 1927 में बी. एन. रेलवे के श्रमिकों की हड़ताल आयोजित करायी । उसके बाद वहां तालाबंदी हो गई । इसके पश्चत् वह आजीवन श्रमिक नेता बने रहे ।

1930 में उन्होंने श्रमिक नेता के नाते लंदन के गोलमेज सम्मेलन में श्रमिकों के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के आमंत्रण को अस्वीकार कर दिया । बाद में 1934 में वह केन्द्रीय विधान सभा में कांग्रेस की ओर से सदस्य चुने गये । 1937 में वह मद्रास विधान सभा के सदस्य चुने गये तथा मद्रास राज्य के श्रम मंत्री नियुक्त हुए । भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान उन्हें पुनः जेल भेजा गया ।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् इन्हें श्रीलंका में भारत का उच्चायुक्त नियुक्त किया गया । 1952 में वह संसद के लिए निर्वाचित हुए और उन्हें श्रम मंत्री नियुक्त किया गया । बाद में उन्होंने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया परन्तु 1957 तक सदस्य बने रहे । जून 1957 में वह उत्तर प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त हुए । 1960 से 1965 तक वह केरल के राज्यपाल रहे । 1967 में वह भारत के उपराष्ट्रपति पद के लिये चुने गये तथा डा. जाकिर हुसैन की मृत्यु के बाद मई से जुलाई 1969 तक कार्यवाहक राष्ट्रपति रहे । 20 अगस्त, 1969 को वह राष्ट्रपति चुने गये । 1974 तक वह राष्ट्रपति बने रहे।

सेवानिवृत्ति के 4 वर्ष बाद उन्होंने लेबर पार्टी आफ इंडिया की स्थापना की ।

उनके निधन पर मैं अपना हार्दिक दुख: प्रकट करता हूं तथा निवेदन करता हूं कि आप शोकाकुल परिवार का यह संवेदना संदेश पहुंचा दें ।

श्री चरण सिंह (बागपत): अध्यक्ष महोदय, बड़ी विडंबना यह है कि श्री गिरि ने श्री संजय गांधी के संबंध में अपना संदेश भेजा, अपना दु:ख प्रकट करते हुए और स्वयं ही कुछ घंटे के बाद वह मौत के शिकार हो गये । आपने और मेरे मित्र श्री त्रिपाठी जी ने जो इस सिलसिले में कहा है, उसके बाद कुछ कहने की आवश्यकता नहीं रह गई है । केवल एक, दो छोटी बातों का मैं जिक्र करना चाहता हूं । शायद ही अपने देश के सार्वजनिक जीवन में कोई एक ऐसा व्यक्ति रहा है जिसने जितने भी सम्मान के पद हो सकते थे, सब को ओकूपाई किया हो, सुशोभित किया हो। स्टेट गवर्नमेंट के मिनिस्टर, सैंट्रल गवर्नमेंट के मिनिस्टर, हाई कमीश्नर, इंटरनेशनल लेबर कान्फेरेंस के चेयरमैन, वाइस प्रैसिडेंट, प्रैसिडेंट आदि सभी पदों को सुनिश्चित किया और लोगों के सम्मान के अधिकारी वह हुए ।

एक बात का और जिक्र करना चाहता हूं, वह यह कि वह अपने असूल की खातिर त्याग करने वाले एक व्यक्ति थे । उसूल तो हम सब लोग रखते हैं, लेकिन उसके लिये अपने पद को छोड़

देना, हम में बहुत कम कर पाते हैं । जिस समय वह मिनिस्टर थे सेंट्रल गवर्नमेंट में, तो प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से उनका मतभेद हो गया किसी उसूल की बिनाह पर, जो कि लेबरर्स के हक की कोई बात थी, मैं उसकी तफसीस नहीं जानता।

कई माननीय सदस्य : बैंक एवार्ड पर ।

श्री चरण सिंह : इस पर उन्होंने इस्तिफा दे दिया था । मुझे यह भी सौभाग्य हासिल है कि वह यू. पी. के गवर्नर जब रहे, उस वक्त वहां पर मैं मिनिस्टर था । उनके निकट संपर्क में आने का भी मुझे सौभाग्य हासिल हुआ । उनसे मिलने और बातचीत करने के बाद आदमी ऐसा महसूस करता था कि एक निर्मल हृदय व्यक्ति, कुर्बानी करने वाला, सीधीसादी जिन्दगी बसर करने वाला, गरीबों के लिये मन रखने वाला था भावना रखने वाला एक व्यक्ति है जिससे मिलकर हमेशा खुशी होती थी । वह बिल्कुल निश्चल किस्म और सरल हृदय के आदमी थे । वहां पर हम लोगों के साथ उनका जो बर्ताव था, मैं हमेशा उसे याद रखूंगा ।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने आपको, और लोकदल के दूसरे सदस्यों को, जो कुछ आपने और मेरे दोस्त त्रिपाठी जी ने कहा है, उसके साथ संबंध करता हूं और आशा करता हूं कि आप हम सब की संवेदनाएं उनके परिवार को पहुंचायेंगे ।

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा) : मैं अध्यक्ष महोदय के विचारों के साथ अपने आप को तथा अपनी पार्टी को संबद्ध करता हूं । श्री वी. वी. गिरि उच्च कोटि के राजनेता थे जोकि अपने जीवन के अंतिम दिन तक राजनीति में सक्रिय रहे । अपने लम्बे राजनीतिक जीवन में उन्होंने सर्वतोमुखी व्यक्तित्व का विकास किया । उन्होंने एक राजनीतिज्ञ के रूप में धल्कि राजनयिक और राज्यपाल के रूप में भी तथा इनसे भी बढ़कर ट्रेड यूनियन के महान नेता के रूप में कार्य किया। प्रथमतः अपने छात्र जीवन में वह डी. वेलेरा के आयरलैंड के स्वतंत्रता आन्दोलन और उनके संगठन से प्रभावित हुए । तब उन्होंने एक संगठन का निर्माण किया ताकि आयरलैंड के स्वतन्त्रता आन्दोलन के आधार पर देश में स्वाधीनता संघर्ष को व्यापक रूप दिया जा सके। बाद में वह गांधीजी के आन्दोलन में सम्मिलित हो गये । अपने पूरे राजनीतिक जीवन में उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया कि वह स्वतंत्र विचारों वाले तथा सिद्धान्तों वाले व्यक्ति थे । उन्होंने 1954 में बैंक एवार्ड के बारे में मंत्रिमंडल के निर्णय से मतभेद होने के कारण मंत्रिपद त्याग दिया क्योंकि मंत्रिमंडल का निर्णय कर्मचारियों के हित में नहीं था।

जब वह देश के राष्ट्रपति के उच्चतम पद पर आसीन थे उसी समय ऐतिहासिक रेलवे हड़ताल हुई । देश के राष्ट्रपति का कार्य निभाते हुए वह संविधानिक स्थिति से बंधे हुए थे, तो भी उन्होंने रेलवे हड़ताल के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की । इस प्रकार जीवन के अंतिम दिन तक उनकी सहानुभूति कर्मचारियों के साथ रही । जिस पार्टी का उन्होंने निर्माण किया उसका नाम भी लेबर पार्टी रखा । इससे प्रकट होता है भारत ने श्रमजीवियों ने सच्चे हितैषी, राजनीतिज्ञ एवं एक स्वतंत्रता सेनानी को खो दिया है।

मेरा निवेदन है कि हमारा संवेदना संदेश शोकाकुल परिवार को पहुंचा दिया जाये ।

प्रो. मधु दंडवते (राजपुर): श्री वी. वी. गिरि को श्रद्धांजलि देते हुए ऐसा लगता है कि जिस भी क्षेत्र में उन्होंने हाथ डाला उसमें उच्चतम स्थिति प्राप्त करने के लिए ही उनका जन्म

हुआ था। जब उन्होंने श्रमिक आंदोलन में भाग लिया तो वह आल इंडिया रेलवेमैन फैडरेशन के प्रसिडेंट रहे, जो स्थान कि जयप्रकाश नारायण जैसे अग्र नेताओं को प्राप्त हुआ था । स्वतंत्रता संग्राम में भी वह बहुत महत्वपूर्ण स्थान पर रहे। राज्य की राजनीति में वह मंत्रिमंडल के सदस्य थे। जब वे केन्द्र में आये तो उन्हें मंत्रिमंडल के स्तर का मंत्रि नियुक्त किया गया, तथा उन दिनों जब लोग अपने पद को बनाये रखने के लिए सब कुछ करते थे, उन्होंने वह पद बैंक एवार्ड पर विवाद के कारण त्याग दिया । मेरे मित्रों को पता नहीं होगा कि जब वह राज्यपाल थे, तब एक गांधीवादी निष्ठावान व्यक्ति के नाते प्रति रविवार नगर की स्वच्छता के लिए कार्य किया करते थे तथा उनसे प्रोत्साहन पाकर कई गांधीवादी कार्यकर्ता उस प्रकार रचनात्मक कार्यों में लग गये । वास्तव में श्री गिरि की प्रतिभा का आधार भी यही था।

मुझे याद है-- मैं समझता हूं कि-- मैं कोई गुप्त भेद नहीं प्रकट कर रहा --- 1974 में जब रेल कर्मचारियों ने हड़ताल की थी उस समय श्री गिरि का भरसक प्रयत्न यह था कि सरकार और रेल कर्मचारियों के बीच कोई समझौता हो जाये तथा उनकी सहानुभूति सदा श्रमजीवी लोगों तथा पददलित लोगों के साथ रही । उनके देहावसान से हमने बहुमुखी प्रतिभा वाला एक वयक्ति खो दिया है। मैं अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी की ओर से आपके द्वारा तथा अन्य सदस्यों द्वारा सभा में व्यक्त भावनाओं के साथ अपने को सम्बद्ध करता हूं तथा निवेदन करता हूं कि हमारी संवेदना शोकाकुल परिवार को पहुंचा दी जाये।

श्री सी. टी. दंडपाणी (पोलाची): अत्यन्त: दु:ख की बात है कि हमने एक उच्च कोटि का नेता तथा श्रमिक नेता खो दिया है । श्री वी. वी. गिरि देशवासियों के अनुकरण के लिए उज्जवल इतिहास छोड़ गये हैं । वह सरल तथा मानवता की सेवा के प्रति अत्यन्त निष्ठावान व्यक्ति थे । श्री वी. वी. गिरि एक वक्ता, प्रशासक, लेखक राजनयिक और स्वतंत्रता सेनानी थे। वह भारत के पहले राष्ट्रपति थे जिन्हें प्रगतिशील शक्तियों ने समर्थन दिया। 1969 में जब वह राष्ट्रपति के पद के लिए खड़े हुए, सबसे पूर्व द्रमुक पार्टी ने उनके समर्थन में वकतव्य दिया । नि:संदेह हमारी पार्टी ने केन्द्रीय सरकार को समर्थन देने का निर्णय लिया था । तब सभी वामपंथी शक्तियां, श्री अजय मुखर्जी, श्री ज्योति बसु तथा अन्य मंत्रियों ने उनकी उम्मीदवारी का समर्थन किया। श्री वी. वी. गिरि अपना पूरा जीवन ट्रेड यूनियन आन्दोलन के लिए समर्पित करना चाहते थे। इसीलिए सेवा-निवृति के बाद उन्होंने नेशनल लेबर पार्टी के नाम से एक पार्टी की स्थापना की। अपनी मृत्यु तक वह पार्टी के लिए कार्य करते रहे। प्रो. दंडवते ने उनकी सत्यनिष्ठा का उल्लेख किया है। राष्ट्रपति के पद से सेवानिवृत होने के बाद उन्होंने स्वयं मद्रास में एक कैम्प की व्यवस्था की। वह सफाई कर्मचारियों के साथ हर गली में सुबह 6 बजे जाया करते थे। इस प्रकार वह सार्वजनिक जीवन में गहन रुचि लेते थे । ऐसा महान व्यक्ति हमने खो दिया है । हमारे देश के लिए यह बहुत बड़ी हानि है । मैं अपने आपको सदस्यों तथा अध्यक्ष महोदय आपके द्वारा व्यक्त भावनाओं के साथ संबद्ध करता हूं । तथा निवेदन करता हूं कि आप हमारे संवेदना संदेश को शोकाकुल परिवार तक पहुंचा दें ।

श्री सतीश अग्रवाल (जयपूर): अध्यक्ष महोदय, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री वराह गिरि वेंकट गिरि के आकस्मिक निधन पर आप ने एवं सदन के सम्माननीय नेताओं ने जो विचार प्रकट किये हैं, मैं अपने आपको उसमें शामिल करता हूं । स्वाधीनता संग्राम के सेनानी, मद्रास विधान सभा के सदस्य, लोक सभा के स्दस्य, राज्य के मंत्री, केन्द्र के मंत्री, श्रीलंका में उच्चायुक्त उत्तर

प्रदेश, कर्नाटक और केरल में राज्यपाल और अन्ततोगत्वा भारत के उप-राष्ट्रपति और राष्ट्रपति पदों पर कार्य करने वाले व्यक्ति, जो आज हमारे बीच में नहीं रहे, उनके संबंध में जो शोक-समवेदना और श्रद्धांजलि यहां पर प्रकट की गई है, मैं अपने आपको उसमें शामिल करता हूं ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दे और शोक-संतप्त परिवार को इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति दे ।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (बसीरहाट): अध्यक्ष महोदय, जिस व्यक्ति के निधन पर हम आज शोक व्यक्त कर रहे हैं वह सच्चे अर्थों में देश के महान सपूत थे तथा उनका सार्वजनिक जीवन अद्वितीय था । वह वास्तव में भारत रत्न थे । मैं उनके क्रियाकलापों एवं उपलब्धियों को दोहराना नहीं चाहता, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि इतिहास में उनका नाम प्रमुखतः श्रमजीवियों के हितों में संघर्ष करने वाले व्यक्ति के रूप में रखा जायेगा । हम लोग जिनका आजीवन संबंध आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के साथ रहा है ऐसा अनुभव करते हैं कि हमने ए. आई. टी. यू. सी. के जनक को खो दिया है जोकि 60 वर्ष पहले बंबई में पहले सम्मेलन में उपस्थित थे । अन्य महापुरुषों जैसे लाला लाजपतराय और देशबन्धु चितरंजन दास के साथ श्री गिरि हमारे देश में श्रमिक आन्दोलन के अग्रणी थे ।

वह श्रमिकों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करके चुप रहने वाले व्यक्तियों में से नहीं थे । उन्होंने ट्रेड-यूनियन और श्रमिकों के अधिकारों के लिए सक्रिय संघर्ष करके श्रमिक नेताओं में ऊंचा स्थान प्राप्त किया । इस शताब्दी के दूसरे तथा तीसरे दशक में कर्मचारियों के संघर्ष एवं हड़तालों विशेष रूप से रेल कर्मचारियों की हड़तालों का श्री गिरि ने नेतृत्व किया। उन्होंने उन दिनों बंगाल—नागपुर रेलवे लेबर यूनियन के नाम से जो यूनियन स्थापित की थी वह आज भी दक्षिण-पूर्वी रेलवे-मैन यूनियन के नाम से दृढ़तापूर्वक कार्य कर रही है । उस समय के उनके बहुत से समर्थक, बेशक वृद्ध हो चुके हैं परन्तु उनके उदाहरण से शिक्षा लेकर वे आज भी कार्यरत हैं । मुझे भी दस वर्ष उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला । जिस ढंग से उन्होंने मंत्री के उच्च पद से त्यागपत्र दिया उसका उल्लेख किया गया है। वह समझते थे कि सरकार बैंक कर्मचारियों के संबन्ध में श्रमिक अपीलीय अधिकरण के एवार्ड में परिवर्तन करना चाहती है, जोकि श्रमिकों के पक्ष में था। जिस सिद्धान्त के लिए वह संघर्षरत रहे उसके विपरीत कार्य करना उन्हें सहाय न हुआ तथा मंत्री पद छोड़ते समय उन्हें एक मिनट भी नहीं लगा, जैसा कि अन्य मित्रों ने कहा बहुत कम लोग ऐसा करते हैं । इसके लिए हम उनका सम्मान करते हैं ।

श्री गिरि पहले राष्ट्रपति थे जो चुनाव में सत्तारूढ़ दल के उम्मीदवार नहीं थे। उन्हें प्रगतिशील शक्तियों द्वारा चुना गया था। राष्ट्रपति के उच्च पद पर उन्होंने अद्वितीय रूप से कार्य किया । जब वह राष्ट्रपति थे तब मुझे एक दो बार उन्हें मिलने का अवसर मिला था ।मैं उनसे पूछा करता था कि आप कैसा अनुभव कर रहे हैं वह छाती तान कर कहते थे कि अभी भी हृष्ट पुष्ट होता जा रहा हूं । मृत्यु का तो नाम ही न लो । वृद्धावस्था में भी वह क्रियाशील एवं शक्ति से भरपूर थे।

बेशक वृद्धावस्था में सोते समय उनका निधन हुआ । इससे अच्छा और क्या हो सकता था । और इसलिए जबकि एक ओर उनके निधन से हमें हार्दिक दुःख हुआ है परन्तु दूसरी ओर उनके महान जीवन को देखते हुए यह दुःख बहुत कम हो जाता है।

मैं अपनी पार्टी की ओर से निवेदन करता हूं कि आप हमारी संवेदना उनके परिवार तक पहुंचायें।

श्री यशवंतराव चव्हाण (सतारा): श्री. वी. वी. गिरि के निधन के साथ कदाचित हमने गांधीजी के युग की, उस पीढ़ी की जिसने 1920 के आन्दोलन में भाग लिया था, अंतिम कड़ियों में से एक कड़ी जो दी है मैं समझता हूं कि उन्होंने एक लम्बा महान एवं परिपूर्ण जीवन जिया। वह उन कुछ एक व्यक्ति में से एक थे जिन्हें उच्च पदों का लालच नहीं था। यह एक दुर्लभ संयोग ही था कि जब हम उनके पदों की लम्बी सूचि देखते हैं तब हमें उनके बारे में सही आभास मिलता है। डा. गिरि के संबन्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने बंबई के श्री एन. एम. जोशी के साथ मिलकर देश में श्रमिक आन्दोलन का सूत्रपात किया और उसे संगठित किया। उन्होंने देश के राजनीतिक जीवन में नयी आर्थिक शक्ति का सम्बन्ध जोड़ा तथा अपने लम्बे जीवन में उसे सर्वाधिक व्यवस्थित संगठन के रूप में स्थापित किया।

उपराष्ट्रपति के नाते वह दूसरे सदन का सभापतित्व करते थे। हमने कई बार उन्हें कार्य करते हुए देखा है। जब वह राष्ट्रपति थे तब भी वह अनेक बार जन-सामान्य के लिए बेचैन देखे गये। उन्हें संविधान के अंतर्गत अपनी सीमाओं का बोध था। अतएव वह यह लिखा करते थे कि राष्ट्र को क्या करना चाहिए। उन्होंने रोजगार के संबंध में एक शोध लेख लिखा था और प्रकाशित किया था।

रोजगार-समस्या में उनकी विशेष रुचि थी। उन्होंने यह शोध-ग्रन्थ प्रकाशित किया है और इसे वितरित किया है। यद्यपि वह एक पद पर आसीन थे, वह बेचैन आदमी थे और वह कुछ करना चाहते थे। अंतिम कुछ दिनों में भी उन्होंने देश के नाम एक अपील जारी की। अंतिम क्षण तक वह मानसिक रूप से सक्रिय रहे।

जब वह राज्यपाल थे तब गृह मंत्री के रूप में मुझे उनके साथ काम करने का अवसर मिला था। वहां भी मैंने यही पाया कि राज्यपाल के रूप में किस कदर वह बेचैन थे, मंत्रिमंडल के साथ वह क्या करना चाहते थे, अपने मंत्रिमंडल से क्या किए जाने की उन्हें आशा थी। वह इस प्रकार के व्यक्ति थे जो अनेक अवसरों पर बिल्कुल स्पष्ट थे और खासतौर पर जब वह इस देश के राष्ट्रपति के पद पर आसीन थे, एक बहुत ही असाधारण अवसर पर उन्होंने वह पद संभाला; हम सभी महसूस करते हैं कि हमने न केवल एक नेता को खोया है बल्कि ऐसा लगता है जैसे हमने परिवार के एक सदस्य को खो दिया हो।

यह एक संतोष की बात है कि उन्होंने एक पूरी जिन्दगी जी है--परितोष की जिन्दगी। परन्तु मृत्यु हमेशा ही दु:खद बात है। हमारी ओर से और हमारे दल की ओर से हमारी भावनाओं को उनके परिवारजनों तक संप्रेषित करने की कृपा करें।

श्री हरिकेश बहादूर (गोरखपूर): मैं और मेरा दल आपको तथा सदन के अन्य माननीय सदस्यों द्वारा व्यक्त की गई संवेदना के साथ पूरी तरह सम्बद्ध है। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. वी. वी. गिरि एक महान स्वतंत्रता सेनानी, विख्यात मजदूर नेता, सुयोग्य प्रशासक और एक उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ थे। उनका जीवन निष्ठा और संमपर्क का जीवन था। उनके रूप में एक बहुत ही साहसी नेता हमने खो दिया। मैं अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं और मैं इसे अपनी और अपने दल की ओर से शोकसंतप्त परिवार तक संप्रेषित करने का अनुरोध करता हूं।

श्री पियूष तिरकी (अलीपुरद्वार) : एक मजदूर नेता के रूप में सुविख्यात भारत के चौथे राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि ने जीवन भर मजदूर वर्ग के कल्याण की कामना की । वह 1932 में महात्मागांधी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन में शामिल हो गए । वह 1927 में जनेवा में हुए अंतर्राष्ट्रीय मजदूर सम्मेलन में गए भारतीय मजदूरों के प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे। वह 1931 में समपन्न हुए दूसरे गोलमेज सम्मेलन में मजदूर वर्ग और मजदूरों के प्रतिनिधि थे। उन्होंने श्री एन. एम. जोशी के साथ कार्य किया और 1926 तथा 1942 में मजदूर संघ कांग्रेस के अध्यक्ष बने । वह 1932 में कांग्रेस कार्य समिति की श्रम उपसमिति के सदस्य थे और वह अखिल भारतीय रेल कर्मचारी संघ के मुख्य संस्थापकों में से एक थे । कांग्रेस की कार्यप्रणाली में पूंजीवादी प्रभुत्व और भारत पूंजीवादी समान के प्रमुख के कारण वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सके ।

उनकी मृत्यु से देश ने, खास तौर पर मजदूर वर्ग ने, एक योद्धा और समर्पित राष्ट्रवादी खो दिया है । मेरा दल आर. एस. पी. दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करने में अन्य लोगों के साथ है और शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति व्यक्त करता है।

श्री जयपाल सिंह कश्यप (आंवला): अध्यक्ष महोदय, माननीय वी. वी. गिरि साहब के निधन पर मैं और मेरा दल उसी प्रकार से दुखी है, जिस प्रकार से पूरा राष्ट्र और यहां के हमारे माननीय सदन के तमाम सदस्य दुखी है । माननीय गिरि जी का व्यक्तिगत इस तरह का व्यक्तित्व था, जो धरती के धरातल से उठ कर भारत के सर्वोच्च पद पर पहुंचा । अपने पैर पर खड़े हो कर उन्होंने पूरा जीवन संघर्ष किया। अगर उनको इस देश के मजदूरों का मसीहा कहा जाये, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं होगा। यहां के मजदूर आन्दोलन को, यहां के पिछड़े वर्ग को उन्होंने जो प्रेरणा दी, अपने जीवन से जो आदर्श दिया, जो त्याग और तपस्या का जीवन उन्होंने विताया-- उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता । एक राष्ट्रपति के रूप में, बल्कि एक सजग राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने जिस तरह से प्रशासन को चलाया, यहां के गरीबों के आन्दोलन के लिये उन्होंने जो त्याग और कुरवानी की, ऊंची से ऊंची कुर्सी को भी यदि मजदूरों के हितों के लिए आवश्यकता पड़ी तो इन्होंने ठुकरा दिया--ऐसा त्यागी और तपस्वी पुरुष आज हमारे वीच में नहीं रहा ।

मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से, माननीय अध्यक्ष महोदय से अनुरोध करता हूं कि हमारे दुख और सम्वेदना को उनके परिवार तक पहुंचाया जाये ।

श्री इब्राहीम सुलेमान सेट (मंजेरी): अध्यक्ष महोदय, आज हम, भारत के एक महान और यशस्वी सपूत की दु:खद मृत्यु शोकाकुल है । भारत के इस महान सपूत के देहावसान पर, मैं और मेरा दल, आप द्वारा व्यक्त सम्वेदनाओं के साथ है।

जहां तक, श्री वी. वी. गिरि का सम्बन्ध है, वह एक पुराने स्वाधीनता सेनानी थे। वह एक महान देशभक्त थे। वह एक कुशल प्रशासक और सुविख्यात मजदूर नेता थे। विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने हमारे देश की सेवा की । वह तमिलनाडु की राज्य सरकार में मंत्री भी रहे । वह केन्द्रीय मंत्री भी रहे । उन्होंने तीन राज्यों में--केरल, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश--राज्यापाल के रूप में सेवा की। वह इस देश के उपराष्ट्रपति और वाद में राष्ट्रपति के पद पर रहे। महोदय, यहां मुझे याद आता है कि जब वह इस देश के राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव में खड़े हुए तब निःसंदेह रूप सभी प्रगतिशील और क्रान्तिकारी ताकतें उनके साथ एकजुट हो गई थी । इसके

साथ इसको भी याद करना होगा कि हमारा संगठन मुसलिम लीग भी इस देश के राष्ट्रपति पद के लिए श्री वी. वी. गिरि की उम्मीदवारी के समर्थन में आगे आया। यहां मुझे यह बात अवश्य कहनी चाहिए और कार्यवाही वृतान्त में रखनी चाहिए कि वह अपने सभी पदों पर बड़ी शान से रहे। इस तरह के एक महान राजनीतिज्ञ और पुराने स्वाधीनता सेनानी की मृत्यु से हमारे देश की अत्यधिक हानि हुई है। मुझे इससे ज्यादा और कुछ नहीं कहना है। यहां मुझे उर्दू के महान इकबाल का एक शेर याद आता है।

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

वह इसी तरह के एक 'दीदावर' थे और ऐसे लोग कभी-कभी जन्म लेते हैं। शोक संतप्त परिवार, उनके पुत्र-पुत्रियों के प्रति मैं अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं और शोक संतप्त परिवार तक अपनी संवेदना पहुंचाने के लिए आपसे अनुरोध करता हूं।

श्री अमर राय प्रधान (कुच विहार): अध्यक्ष महोदय, एक बार फिर हम दुःख से घिर गए हैं।

अपने दल फारवार्ड ब्लाक की ओर से हम भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति की स्मृति में अपना आदर और श्रद्धांजली व्यक्त करते हैं। हमने मजदूर-वर्ग का एक अच्छा दोस्त और मजदूर आन्दोलन का एक पथ-प्रदर्शक खो दिया है। केवल यही तहीं, हमने सुनियोजित अर्थ-व्यवस्था का भी एक अगुआ खो दिया है। 1938 में हरिपुरा में हुए कांग्रेस अधिवेशन में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे। उस समय, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने भारत के भविष्य के लिए नियोजित अर्थव्यवस्था के बारे में सोचा उन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में एक आयोजन समिति गठित की और समिति के दूसरे सदस्यों में डा. मेघनाथ साह और डा. वी. वी. गिरि शामिल थे।

कुछ ही समय पहले, लायब्रेरी में मैं, 1926 में मद्रास में अखिल भारतीय मजदूर यूनियन कांग्रेस के समक्ष दिया गया डा. गिरि का अध्यक्षीय भाषण पढ़ रहा था, उसमें उन्होंने कहा:

> "दोस्तो, यह मत भूलिए कि मजदूर यूनियन एक शिक्षा है। यदि मजदूर इसमें समुचित रूप से पाठ लेते हैं तो इससे उन्हें सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से बेहतर आदमी बनने में सहायता मिलेगी।"

मेरे विचार में यह आज भी सच है।

डा. गिरि के शोक संतप्त परिवार को मेरी वेदना और सहानुभूति पहुंचाने की कृपा करें।

श्री गुलाम रसूल कोचक (अनंतनाग): महोदय, एक बार फिर मौत ने हमसे एक देश भक्त डा. वी. वी. गिरि को हमसे छीन लिया है, जो शांति के साथ जिए और शांति के साथ मरे, और जीवन में झेलनी पड़ी मुसीबतों और संकटों से कभी विचलित नहीं हुए। वह एक ऐसे स्वाधीनता सेनानी थे जो निष्ठा के साथ लड़े। उनके कुछ आधार भूत लक्ष्य थे, जिनके लिए वह जीवन भर संघर्षरत रहे।

उन्होंने एक प्रशासक के रूप में कार्यभार संभाला और राष्ट्र के कल्याण में अपना योगदान दिया मजदूर आन्दोलन के वह एक स्तम्भ थे। मजदूरों के हित के लिए लड़े और देश के मजदूर आन्दोलन में नाम और ख्याति अर्जित की। तब वह भारत के राष्ट्रपति के उच्चतम पद पर

पहुंचे और राष्ट्रपति के कर्तव्यों का निर्वाह करते समय इन्होंने अपने अनुभव, परिपक्वता और वस्तुनिष्ठा का योगदान किया।

इस समय, हम एक ऐसे व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि अर्पित करने यहां इकट्ठे हुए हैं जो स्वातंत्र्य आन्दोलन के एक अग्रणी नक्षत्र थे। वह हमारे राष्ट्र के निर्माताओं में से एक थे। उन्होंने अपना सर्वस्व, यहां तक कि अपना जीवन भी, निस्वार्थ भाव से देश के हित में समर्पित कर दिया।

अपनी ओर से और अपनी पार्टी अखिल जम्मू एवं कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस की ओर से मैं भारत की इस महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं आशा करता हूं कि इन संवेदनाओं को, जिनमें हम समूचे सदन के साथ हैं, शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दिया जायेगा।

श्री एन. सुन्दर राजन (शिवकाशी): अध्यक्ष महोदय, अपने प्रिय संजय गांधी की मृत्यु के तुरन्त बाद, राष्ट्रीय नेता और भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि की मृत्यु पर शोकाकुल होना बड़ा ही कष्टकारक कर्तव्य है। भारत के राष्ट्रपति बनने से पूर्व श्री वी. वी. गिरि भारत सरकार के अनेक पदों पर रहे। भारत के राष्ट्रपति के रूप में उनके चुनाव से राष्ट्रीय राजनीतिक में उनकी उतकर्ष प्रदर्षित हुआ बावजूद इसके कि उन्होंने एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन दाखिल किया था। इस देश में मजदूर आंदोलन के विकास में उनका योगदान अतुलनीय है। उनका नाम मजदूरों के कल्याण का पर्याय बन गया है। मजदूरों के हित में उन्होंने केवल शाब्दिक सहानुभूति ही व्यक्त न की बल्कि जब वह पंडित नेहरू से, उनके मंत्रिमंडल के साथी के रूप में, इसके लिए उनसे जूझते रहे। यद्यपि श्री संजय गांधी से भिन्न एक स्वभाविक रूप से उनका देहावसान हुआ, तब भी उनकी मृत्यु से हुई देश की हानि समान रूप से अपूर्णीय है।

इन शब्दों के साथ, मैं अपनी ओर से और अपने दल अखिल भारतीय अन्ना द्रमुक और अपने नेता थिरू पुरातची थालावियार की ओर से, व्यक्त की गई संवेदनाओं में आपके साथ शरिक हूं और शोक संतप्त परिवार तक अपनी पीड़ा को संप्रेषित करने का अनुरोध करता हूं।

श्री ए. के. राय (धनबाद): अध्यक्ष महोदय, हम दु:खपूर्ण मृत्यु की खबरों से घिर गए हैं जो हमें याद दिला रही हैं कि जीवन की भांति मृत्यु भी एक अन्वरत प्रक्रिया है।

महोदय, ये ऐसे अवसर हैं जब हम एक व्यक्ति के गुणों को गिनाते हुए विशेषणों के प्रयोग से हम केवल उस व्यक्ति की महत्ता को कम करते हैं। यह भी एक ऐसा ही अवसर है। मैं श्री वी. वी. गिरि के संबंध में एक विशेषता बताना चाहूंगा जिसने मुझे प्रभावित किया। एक बार विंस्टन चर्चिल ने स्वयं को 75 वर्ष का एक नौजवान कहा था। मैं श्री वी. वी गिरि को 85 वर्ष का एक वृद्ध आदमी नहीं बल्कि एक नवयुवक मानता हूं। श्री वी. वी. गिरि ने इसका एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि किस तरह कोई व्यक्ति अपने जीवन के अंतिम क्षण तक सक्रिय रह सकता है और तब बिना बूढ़ा हुए भी मर सकता है।

अध्यक्ष महोदय, श्री वी. वी. गिरि के चुनाव से देश में उन कुछ शक्तियों का ध्रुवीकरण शुरू हो गया जिन्होंने इतिहास बनाया। यह एक शुरूआत थी और एक दशाब्दी के बाद हम यह अनुभव कर रहे हैं कि हम उस अध्याय की समाप्ति पर हैं।

बहुत लोगों ने एक महान मजदूर नेता के रूप में उनकी प्रशंसा की है । वह तब भी मजदूरों को नहीं भूले जब वह राष्ट्रपति थे । मुझे एक बात याद आती है । केवल यही बात नहीं थी कि वह दूसरे महान मजदूर नेताओं को भूले नहीं बल्कि वह अपने पुराने कामरेडों को भी नहीं भूले जिनमें से एक सिंदरी फैक्टरी में मेरे साथ फिटर के रूप में काम करता था । मैंने उसको व्यक्तिगत रूप से लिखे गए वी. वी. गिरि के पत्र देखे हैं जबकि वह राष्ट्रपति थे और उन पत्रों में उन्होंने उसको 'कामरेड' के नाम से सम्बोधित किया है ।

इसके साथ मैं कहूंगा कि उन्होंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। हमें उसका अनुसरण करना चाहिए । भारतीय राजनीति में वह अपने आपको एक अप्रतिम वर्ग के रूप में प्रस्तुत किया करते थे और राष्ट्र को उनके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिये ।

इन शब्दों के साथ मैं उनकी स्मृति में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय: दिवंगत आत्मा की स्मृति में सम्मान स्वरूप सदन कुछ समय के लिए मौन-धारण करने हेतु खड़ा होता है ।

तत्पश्चात् सदस्य कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हुए ।

अध्यक्ष महोदय: दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान स्वरूप, सदन कल प्रातः व्यारह बजे समवेत होने तक के लिये स्थगित किया जाता है ।

11.45 म. पू.

तत्पश्चात्, लोकसभा मंगलवार, 26 जून, 1980/आषाढ़ 1902 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई ।

MGIPF—284LSS/80—210—14-8-80—210